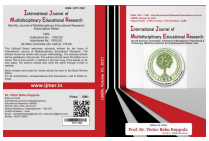
Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :7.816(2021); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:12(3), December: 2021
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in
Digital certificate of publication: http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd December
Publication Date:31st December 2021

DOI: http://ijmer.in.doi./2021/10.12.50

समाज में दान परम्परा का महत्त्व : बौद्ध धर्म के विशेष सन्दर्भ में

Babita
Ph.D. Research Scholar
Department of History, University of Delhi
Delhi, India

'दान' परम्परा समाज में सदियों से चली आ रही है| दान जैसी परम्पराओं से पता चलता है कि भारतीय समाज में पुराने लोकाचार, मान्यतायें, सामाजिक रीतिरिवाज और विभिन्न धार्मिक कर्मकांड आदि लोगों के मन में गहराई से बसे हुए थे| वे आसानी से इनसे छुटकारा नही पा सकते थे| लेकिन यहाँ 'दान' जैसी परम्परा को धार्मिक विकास, सामाजिक संगठन और दूसरों की भलाई से भी जोड़कर देखा जाता है| 'दान' एक ऐसी सामाजिक परम्परा या प्रथा है, जिससे कई प्रकार से दूसरों की मदद होती है और दानदाता को आध्यात्मिक संतुष्टि मिलती है|

बुद्धकाल में भी 'दान' को अधिक महत्त्व दिया गया था, बुद्ध की शिक्षाओं में भी 'दान परम्परा' का सन्दर्भ मिलता है, इसी कारण लोग प्रेरित होकर बौद्ध संघ को दान दे रहे थे| बौद्ध साहित्य में भी स्पष्ट देखा जा सकता है कि दान, बौद्ध धर्म की महत्त्वपूर्ण अवधारणाओं में से एक रहा है, जिसके तहत आम आदमी और संघ के बिच प्रमुख सम्बन्ध बने| इस प्रकार 'दान परम्परा' को लोगों ने बड़े पैमाने पर धार्मिक अनुष्ठान के रूप में भी देखा| बुद्ध के परिनिर्वाण के बाद भी स्तूपों के स्तम्भ, हर्मिका, वेदिकाओं आदि पर अनुयायियों के द्वारा ऐसे दृश्यों को प्रदर्शित किया गया, जिन्होंने बुद्ध और उनके संघ को संरक्षित किया था| जिस काल में (ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी से तीसरी शताब्दी इस्वी) स्तूपों का निर्माण हुआ, उस समय के उपासकों ने दान के महत्त्व को भलिभांति समझा और बुद्धकाल के संरक्षकों तथा विभिन्न घटनाओं को महत्त्व दिया| जैसे- भरहुत स्तूप के स्तम्भ पर राजा अजातशत्रु से सम्बन्धित तीन दृश्य अंकित हैं, इस स्तम्भ को अजातशत्रु स्तम्भ कहा जाता है| शिलालेखीय साक्ष्य से पता चलता है कि इसके निर्माण के लिए सम्मानित व्यक्ति *इसिपालिता* ने दान दिया था| यद्यपि यह प्रमाणित नही करते कि सम्पूर्ण अजातशत्रु स्तम्भ का 'दान' *इसिपालिता* द्वारा दिया गया था| कुछ ऐसे नामों के शीर्षक (आया, भद्दता, भनक और नवकमिका आदि) प्राप्त हुए हैं, जिन्होंने इस स्तम्भ पर छः व्याख्यात्मक पेनल्स का 'दान' दिया था| ऐसे ही भरहुत स्तूप में प्रसेनजित स्तम्भ के भी दृश्य मिलते हैं, इस स्तम्भ के लिए दान *इसिदिना* ने दिया था|[1] अतः स्तूप निर्माण के समय बौद्ध अनुयायी अपने नाम से ऐसे बुद्धकालीन राजा और मुख्य उपासक-उपासिकाओं आदि से सम्बन्धित दृश्यों तथा मूर्तियों के लिए दान दे रहे थे, जिन्होंने बुद्ध तथा धम्म को संरक्षित किया था|

इस प्रकार कहा जा सकता है कि 'दान परम्परा' की अभिवृद्धि एक महत्त्वपूर्ण धार्मिक परम्परा के रूप में भी हुयी, इस कारण बौद्ध संघ के विकास और बौद्ध स्मारकों के विकास में दान एक संरक्षक (दानदाता) के रूप में महत्त्वपूर्ण कारक बना| बुद्धकाल के धनवान गृहपति अनाथपिंडक से लेकर राजकीय परिवारों तथा अन्य व्यवसायिक वर्गों (शिल्पकार, कपड़ा बुनने वाले जुलाहे, साहूकार, भिक्षु, दंतकार, उपदेशक आदि) अपनी- अपनी हैसियत के अनुसार बुद्ध के धर्म को विकसित करने के लिए दान दे रहे थे| इस प्रकार 'दान परम्परा' के विश्लेषण से कुछ ऐसे विषयों को समझा जा सकता है, जिसमें सामाजिक स्तरीकरण की प्रक्रिया में समाज के एक विशेषाधिकार वाले

[1] विद्या दहेजिया, *डिस्कोर्स इन अर्ली बुद्धिस्ट आर्ट विजुअल नैरेटिव्स आफ इंडिया*, दिल्ली: मुंशीराम मनोहरलाल पब्लिशर्स, 2005, पृ.109

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :7.816(2021); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:12(3), December: 2021
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in
Digital certificate of publication: http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd December
Publication Date:31st December 2021

DOI: http://ijmer.in.doi./2021/10.12.50

समूह के साथ मिलकर समाज का अन्य वर्ग भी बुद्ध धर्म को संरक्षित कर रहा था, तथा ब्राह्मणवादी संस्कृति के रहते सभी वर्ग के लोगों पर बुद्ध के धर्म का प्रभाव पड़ रहा था|

समाज में 'दान परम्परा' इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इससे एक सामाजिक संगठन को बढ़ावा मिलता है तथा किसी असहाय की सहायता हो जाती है| सामाजिक परिस्थितियाँ चाहे जैसी भी रही हों, लेकिन इन समूहों के द्वारा दिए गये दान से पता चलता है कि इन्होंने धार्मिक उदेश्य की प्राप्ति के लिए एक साथ मिलकर 'दान' जैसे कार्य को अंजाम दिया| इस तरह की धार्मिक और सामाजिक प्रक्रिया में सभी का सहयोग तथा सामंजस्य विद्यमान था| दान परम्परा से अन्य महत्वपूर्ण तथ्यों को भी समझा जा सकता है|

दान का अर्थ- परोपकार दूसरों की मदद करना| दान कई प्रकार के रीतिरिवाजों का पालन करने के लिए भी दिया जाता है| दूसरों के लिए अपनी व्यक्तिगत वस्तुओं का दान किसे दिया? और क्या दिया गया? परन्तु तकनीकी रूप से दान दूसरों की भलाई को संदर्भित करता है| यह उदारता के व्यवहार और सामाजिक प्रसिद्धी को भी बढ़ाता है| दान का कार्य मनुष्य के अंदर त्याग की भावना, दया, बलिदान आदि मानवीय गुणों को उत्पन्न करता है| इस प्रकार के गुणों से समाज में दूसरों के सुख और कल्याण का ध्यान रखने में मदद मिलती है| बुद्ध ने *अंगुत्तरनिकाय* के *दानवर्ग* में भिक्षुओं को दो प्रकार के दान के बारे में बताया| एक- भौतिक वस्तुओं (खाना-पीने का सामान, कपड़ा, दवाईयां आदि) का दान तथा दूसरा- धम्म दान (धर्म का दान) अर्थात धर्म की शिक्षा देना| उन्होंने ये भी कहा है कि इन दोनों में *धर्मदान* ही श्रेष्ठ है|[2] यहाँ धम्म दान तथा भौतिक वस्तुओं के दान का अर्थ है कि जब बुद्ध अपने अनुयायियों की समस्याओं और धार्मिक संतुष्टि के लिए धर्म की शिक्षा देते थे तो बदले में अनुयायी संघ को उनकी जरूरतों से सम्बन्धित वस्तुओं का दान देते थे| इस प्रकार दान दाता और गृहण करने वाले दोनों की सहायता हो जाती थी|

इस संसार में प्रत्येक मनुष्य के जीवन में विभिन्न प्रकार की घटनाएं होती रहती हैं| इस तरह की घटनाओं के होने का कारण माना जाता है, ऐसा माना जाता है कि भगवान दुनिया का निर्माता है, जितनी भी गतिविधियाँ हैं, वह सब भगवान की इच्छा से होती हैं| लेकिन, बौद्ध धर्म इसके विपरीत था, इसमें ईश्वर के अस्तित्व को नकारा गया है| बौद्ध धर्म इस दुनिया में व्यावहारिक तथा प्रतिदिन के जीवन से सम्बन्धित मामलों के समाधान तथा परलोक में अपनी भलाई के लिए था| बौद्ध धर्म के अनुसार मनुष्य अपने अच्छे कर्मों के कारण दुखों से छुटकारा पाकर इस संसार और परलोक में उच्च स्थिति को प्राप्त कर सकता है| इस कारण से बुद्ध ने कुछ ऐसे विशिष्ट उपदेशों का प्रतिपादन किया, जिससे दुनिया में विभिन्न घटनाओं से होने वाले दुख को दूर किया जा सकता हैं| ये उपदेश, बौद्ध साहित्य में संकलित हैं| जिसमें कर्म को सर्वोपरी माना गया है| कर्म एवं 'दान' की अवधारणा बौद्ध ग्रन्थों में महत्वपूर्ण मानी गई है| कर्म से तात्पर्य कार्य करने के नियम से है, जिसे बौद्ध धर्म के अंतर्गत बिना किसी भेदभाव के मानव जगत में प्रमुख कारक माना जाता है| इस कर्म के अनुसार, एक व्यक्ति जो कुछ भी कार्य करता है, उसका कुछ न कुछ परिणाम अवश्य होता है| किसी के जीवन में होने

[2] "द्वेमानि, भिक्खवे, दानानि| कतमानि द्वे? आमिसदानं च धम्मदानं च| इमानि खो, भिक्खवे, द्वे दानानि| एतदग्गं, भिक्खवे, इमेसं दिन्नं दानानं यदिदं धम्मदानं" ति, अंगुत्तरनिकायपालि , भाग- एक, (हिंदी अनुवाद), स्वामी द्वारिकादासशास्त्री, वाराणसी: बौद्धभारती, 2002, पृ.-124,

Cover Page

DOI: http://ijmer.in.doi./2021/10.12.50

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :7.816(2021); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:12(3), December: 2021
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in
Digital certificate of publication: http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd December
Publication Date:31st December 2021

वाली विभिन्न घटनाएं अतीत में किए गए किसी कर्म का परिणाम होती हैं| इस दृष्टिकोण से, यह माना जा सकता है कि दुनिया में मनुष्य के आस-पास जो कुछ भी घटित होता है, वह सब कुछ अतीत में किये गये कर्मों से होता है| बौद्ध साहित्य त्रिपिटक में संकलित बुद्ध की शिक्षाएं, विभिन्न प्रकार के कर्मों की गणना करती हैं| दान की प्रथा उनमें से एक है|

बौद्ध साहित्य में कई प्रकार के दानों के बारे में जानकारी मिलती है| स्तूपों के निर्माण में विभिन्न समुदाय के लोगों ने जो दान दिए, वे पूर्व के दानों के फल के बारे में अवगत थे, इसलिए उन्होंने श्रद्धापूर्वक स्तूपों के निर्माण में दान की परम्परा का अनुशरण किया| प्राचीन समय से आज तक दान परम्परा का अनुशरण किया जाता रहा है, जिसकी वजह से विभिन्न सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं का अस्तित्व निरंतर बना रहा और अनेक अवसरों पर सहायता का विषय भी रहा है| बौद्ध साहित्य और कला में *दानपारमिता* के बारे में उल्लेख मिलता है| *दानपारमिता* का अर्थ है- सभी बाह्य वस्तुओं का त्याग करना तथा अपना सर्वस्व दान करने को दानपारमिता कहा जाता है| *वेस्सन्तर जातककथा* में राजकुमार वेस्सन्तर के सर्वस्व त्याग का उल्लेख मिलता है|[3] इसके अतरिक्त साँची के स्तूप पर *वेस्सन्तर जातक* के दृश्य अंकित किये गये हैं, इन दृश्यों में वेस्सन्तर अपनी पत्नी और बच्चों को भी दान करते हुए दिखाए गये हैं| *पेतवत्थु* में दान के बारे में उल्लेख मिलता है कि दान किसी की सहायता या अपने कल्याण तथा धार्मिक भाव से किसी व्यक्ति को दिया जाता है| अत: अपने दुखों को दूर करने के लिए दान *त्याग परम्परा* और आर्थिक व्यवस्था का एक हिस्सा है|

इतिहासकार *विद्या देहेजिया* 'दान' के सन्दर्भ में कहती हैं कि पहली शताब्दी इस्वी पूर्व प्रारम्भिक स्तूपों का निर्माण सामूहिक दान के माध्यम से किया गया जोकि शिलालेखीय सामग्री से भी सत्यापित होता है| ये दान स्तूपों के रेलिंग स्तंभों, गुफाओं, मूर्तियों के स्लेव और मन्नत अभलेखों में संदर्भित हैं, जोकि दाताओं के धार्मिक प्रयोजन को दिखाते हैं| ये दान सामाजिक वर्ग जैसे- राजा-रानी, भिक्षु-भिक्षुणियाँ, व्यापारी, गृहपति, कलाकार, लोहार, सुनार, बढ़ई, गणिका (नगरवधु), सामान्य महिलाएं, लेखक आदि ने दिए थे| इन सभी ने किसी न किसी उदेश्य से दान कर्म किया था|[4] अत: इस प्रकार दान देने से अन्य समूह (जैसे कोई धार्मिक संस्था) तथा दूसरों के साथ सम्बन्धों का निर्माण हुआ| इस प्रकार दान देने का इरादा सामान्य होने के साथ साथ सामाजिक और सांस्कृतिक आवश्यकता बन गया, जिसने दानदाता को दान देने के लिए प्रेरित किया| इस प्रकार की प्रक्रिया से हमें समाज में लैंगिक सम्बन्धों और वर्गीकरण को समझने में मदद मिली| दान के साक्ष्य निश्चित रूप से यह संकेत देते हैं कि दान देने की परम्परा का प्रभाव समाज के प्रत्येक तबके पर पड़ा| उपिन्दर सिंह कहती हैं कि अभिलेखीय प्रमाणों के विश्लेष्ण से यह स्पष्ट हो जाता है कि संघ के सदयों और आम बौद्ध उपासकों के सामाजिक धार्मिक व्यवहारों में बहुत अंतर नही था| दान, संघ के सदस्यों के लिए भी उतना ही महत्वपूर्ण था जितना आम उपासकों के लिए| इस प्रकार स्तूपों के विकास में बौद्ध भिक्षु और भिक्षुणियों के साथ साथ आम बौद्ध उपासकों ने भी बढ़ चढ़कर हिस्सा ले रहे थे| स्तूपों से प्राप्त महिलाओं द्वारा दिए गये दान के साक्ष्य से स्पष्ट हो जाता है कि भौतिक संसाधनों पर कुछ हद तक उनका अधिकार था|[5]

---

[3] जातक (हिंदी अनुवाद), भाग-6, जातक सं.540

[4] Vidya Dehejia, The Collective and Popular Basis of Early Buddhist Patronage: Sacred Monuments, 100 BC-AD 250 (Barbara Stoler Miller, The Power of Art Patronage in Indian Culture) New York: Oxford University Press, 1992, p-35

[5]उपिन्दर सिंह, प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास पाषाण काल से 12 वीं शताब्दी तक, चेन्नई: पियर्सन इंडिया एजुकेशन सर्विसेज, 1917, p-476

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :7.816(2021); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:12(3), December: 2021
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in
Digital certificate of publication: http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd December
Publication Date:31st December 2021

DOI: http://ijmer.in.doi./2021/10.12.50

रोमिला थापर ने दान से सम्बन्धित कार्य की दो प्रकार से व्याख्या की है| सामाजिक समुदाय और संघ के बीच का आदान-प्रदान का सम्बन्ध समानांतर समाज की रचना की धुरी था और इस सम्बन्ध को कई स्तरों पर देखा जा सकता है| राजनीतिक स्तर पर, राजकीय संरक्षण आदान प्रदान का स्रोत था| संरक्षण दो प्रकार का था| एक तो संघ को प्रत्यक्ष रूप से विहार, आवास, गुफाएं और भूमि दान की जाती थी| दूसरा संघ को राज्य से अप्रत्यक्ष समर्थन भी प्राप्त होता था, जैसे राज्य व्यापार और औद्योगिक श्रेणियों में निवेश करता था, जिससे प्राप्त ब्याज मठों और संघों की जरूरते पूरी करने के लिए दान कर दिया जाता था| ऐसी परिस्थितियों में संघ विहार उन्हें कई प्रकार की सेवाएं उपलब्ध कराते थे|[6] जैसा कि *थापर* ने कहा है कि संघ के लिए राजकीय संरक्षण एक आदान प्रदान का स्रोत था अर्थात राजकीय परिवार और अन्य गृहस्थ समुदाय अपने सांसारिक दुखों के उपाय के लिए बुद्ध से धार्मिक उपदेश ग्रहण करते थे और फिर उनके संघ के पालन पोषण के लिए कई प्रकार के दान, उपहार आदि देते थे| अतः बुद्ध के संघ से गृहस्थ समुदाय को कई प्रकार के आचार व्यवहार और धार्मिक प्रयोजन प्राप्त होते नजर आते हैं| इस प्रकार दान परम्परा एक और अन्य पहलू को भी इंगित करती है, जैसे- समाज और अर्थव्यवस्था के अध्ययन के लिए भी दान एक स्रोत है| अत: दान देने की प्रथा ने समाज व आर्थिक सरोकारों के सम्बन्ध में एक अंतरदृष्टि प्रदान की है|

दान देने का कार्य अन्य दूसरे के लिए और अपने लिए किसी न किसी तरह का लाभ पहुँचाने का इरादा भी होता है, जिसे एक प्रकार का सराहनीय कार्य माना जा सकता है, जो अपने दाता के वर्तमान और भविष्य के अस्तित्व को आकार देने में एक प्रमुख भूमिका निभाता है| तत्कालीन समय में बहुत से राजाओं ने बड़े-बड़े दान दिए, जिससे उनकी समाज में काफी प्रतिष्ठा बढ़ी, साहित्य और कला में ऐसे राजाओं का उल्लेख मिलता हैं| जैसे *वेस्सन्तर जातक*[7] में राजकुमार वेस्सन्तर अपने बौद्धिसत्व लाभ के लिए ब्राह्मण को अपना सर्वस्व दान कर दिया था| यह जातक कथा साँची स्तूप के उत्तरी तोरण द्वार पर उत्कीर्ण की गई है| दृश्य में राजकीय हाथी का दान, रथ का दान, अपने दो बच्चों तथा पत्नी का दान आदि सब, शक्र को दान करते हुए दिखाया गया है|[8] वेस्सन्तर की दानशीलता के दृश्य भरहुत स्तूप पर भी मिलते है|[9] विदिशा का राजा फगुदेव का दान,[10] राजा धनभुती का दान[11], राजा वेस्सन्तर, गृहपति अनाथ पिण्डक,[12] आदि ने सामाजिक प्रतिष्ठा और धर्म का पालन करने के उदेश्य से दान दिया था| एक तरह से समाज में इन राजाओं और व्यापारियों के दान, इनकी राजशाही और आर्थिक परिप्रेक्ष्य को प्रतिबिम्बित करते है| हालाँकि इनकी व्यक्तिगत प्रसिद्धी और बलिदान की भी भूमिका हो सकती है| परन्तु सबसे ज्यादा इन्होंने धार्मिक लाभ के लिए दान दिया| *विजयनाथ* का सामाजिक परिप्रेक्ष्य के सम्बन्ध में कहना है कि राजा, व्यापारी, और गृहपति आदि के द्वारा दिया गया दान, उस समय की बदलती महत्वपूर्ण अर्थव्यवस्था को

---

[6] रोमिला थापर, अनुवादक- आदित्यनारायण सिंह, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, ग्रन्थ शिल्पी: 2001, पृ.82
[7] जातक भाग-6, भदन्त आनंद कौसल्यायन, प्रयाग: हिंदी साहित्य सम्मेलन, 1956, पृ.518, जातक संख्या 547
[8] John Marshal and Alfred Foucher, The Monument of Sānchī, Delhi: Swati Publikeshn, p-225-226
[9] B.M. Barua, Barhut, Book II, Jataka Scenes, Culcutta: Culcutta University: 1979, p-164
[10] Vedis [ā] Phagudevva dānam, see, H.Lüders, A.S.I., Corpus Inscriptionum Indicarum, Bharhut inscriptions voll. II, Ootacamund: Government Epigraphist for India, 1963, p-25
[11] Dhanabhūtisa dāna (m) vedikā, toraṇāni cha ratanagrih,(e) sarvabudhapujāye sahā mātāpitihi sahā (cha) chatu (hi) parishāhi, H.Lüders, A.S.I., Corpus Inscriptionum Indicarum, Bharhut inscriptions voll. II, Ootacamund: Government Epigraphist for India, 1963, p- 13
[12] Jetavana Aāadhapediko deti kotisamthatena ketā, (presents jetavana, having bought it for a layer of crores), see, H.Lüders, A.S.I., Corpus Inscriptionum Indicarum, Bharhut inscriptions voll. II, Ootacamund: Government Epigraphist for India, 1963, p-105

Cover Page

DOI: http://ijmer.in.doi./2021/10.12.50

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :7.816(2021); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:12(3), December: 2021
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in
Digital certificate of publication: http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd December
Publication Date:31st December 2021

इंगित करता है।[13] दान देना रीतिरिवाज का सबसे प्रभावी साधन के रूप में माना जाता है। दान देना न केवल पाप की परिशुद्धता की अवधारणा में व्यापक विश्वास को बढ़ाता है, बल्कि यह कठोर सामाजिक और नैतिक मानदंडों के समान रूप से लगातार बदलाव को भी रेखांकित करता है। दान देने कारण तत्कालीन नगरों एवं ग्रामों में बौद्ध धर्म के फैलने के साथ धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सम्बन्धों एवं विभिन्न प्रथाओं की शुरुआत हुई।

References

- Aṅguttara Nikāya Pāli, (Hindi, Vol.1), Swami Dwarikadas Shastri, Varanasi: Bouddh Bharti, 2002
- Vimānavaṭṭhupāli, Pétvaṭṭhu pāli (Hindi) Swami Dwarikadas Shastri, Varanasi: Bouddh Bharti, 2008
- Barua B.N., Bharhut (Book-I, I1, III), Stone as a story teller, Calcutta: Indological Book Corporation, 1979
- Jas. Burgess, The Buddhist Stupas of Amaravati and Jaggayyapeta, Vol.1, Varanasi: Indological Book House, 1970
- Marshall John, The monuments of Sānchi, vol. I, Delhi: Swati publication, 1982
- Thaper Romila, Purvkalin Bhart prarmbh se 1300 esvitak (Hindi), Delhi: Madhyam Karyanvaya Nideshaly, first pub. 2008
- Huntington, Susan L. The Art of Ancient India, New York: Weather Hill,1985
- Chakravarti Uma, Social Dimention of Early Buddhism, Delhi: Munshiram Manoharlal, pub, 1996
- Singh Upinder , Sānchi: The history of the patronage of an ancient Buddhist establishment, I.E.S.H.R, 33, Delhi: 1996
- Vidiya Dehejiya, Discourse in Early Buddhist Art Visual Narratives of india, Delhi: Munshram Manoharlal pub; first ed.1997
- Dehejia Vidya, The Collective and Popular Basis of Early Buddhist Patronage: Sacred Monuments, 100 BC-AD 250 (Barbara Stoler Miller, The Power of Art Patronage in Indian Culture) New York: Oxford University Press, 1992, p-35

[13] Vijay Nath, Dāna: Gift System in Ancient India (c. 600-c.AD.300) A Socio-Economic Perspective, Delhi: Munshiram Manoharlal Publishers, ...p-54